

## 9. दाख की बारी के मजदूरों का दृष्टान्त मत्ती 20: 1-16

शुरुआती प्रश्न: आपका सबसे सर्वश्रेष्ठ बॉस, नियोजक या शिक्षक कौन रहा है? आपकी राय में उन्हें किन बातों ने सर्वश्रेष्ठ बनाया?

“<sup>1</sup>स्वर्ग का राज्य किसी गृह स्वामी के समान है, जो सवेरे निकला, कि अपन दाख की बारी में मजदूरों को लगाए। <sup>2</sup>और उसने मजदूरों से एक दीनार रोज पर ठहराया और उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। <sup>3</sup>फिर एक पहर दिन चढ़े उसने निकलकर अन्य लोगों को बाजार में बेकार खड़े देखकर, <sup>4</sup>उनसे कहा, ‘तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूँगा’; सो वे भी गए। <sup>5</sup>फिर उसने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकलकर वैसे ही किया। <sup>6</sup>और एक घंटा दिन रहे फिर निकलकर औरों को खड़े पाया, और उनसे कहा; ‘तुम क्यों यहाँ दिन भर बेकार खड़े रहे?’ उन्होंने उससे कहा, ‘इसलिये, कि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं लगाया।’ <sup>7</sup>उसने उनसे कहा, ‘तुम भी दाख की बारी में जाओ।’ <sup>8</sup>साँझ को दाख बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, ‘मजदूरों को बुलाकर पिछलों से लेकर पहिलों तक उन्हें मजदूरी दे दे।’ <sup>9</sup>सो जब वे आए, जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उन्हें एक एक दीनार मिला। <sup>10</sup>जो पहिले आए, उन्होंने यह समझा, कि हमें अधिक मिलेगा; परन्तु उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला। <sup>11</sup>जब मिला, तो वह गृहस्थ पर कुडकुड़ा के कहने लगे <sup>12</sup>इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया, और तूने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्होंने दिन भर का भार उठाया और धूप सही?’ <sup>13</sup>उसने उनमें से एक को उत्तर दिया, ‘हे मित्र, मैं तुझसे कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तूने मुझ से एक दीनार न ठहराया?’ <sup>14</sup>जो तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूँ। <sup>15</sup>क्या उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूँ सो करूँ? क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है? <sup>16</sup>इसी रीति से जो पिछले हैं, वह पहले होंगे, और जो पहले हैं, वे पिछले होंगे।। (मत्ती 20:1-16)

### अपनी फसल के लिए गृहस्वामी का जुनून

पूरे पवित्रशास्त्र में, परमेश्वर अपने लोगों को एक दाख की बारी के रूप में संदर्भित करता है। उसने प्रेम से इसकी देखभाल की, इसकी छंटाई की, और उस पर नजर रखी।

“क्योंकि सेनाओं के यहोवा की दाख की बारी इजराइल का घराना, और उसका प्रिय पौधा यहूदा के लोग हैं” (यशायाह 5:7)

यह दृष्टान्त एक ऐसे गृह स्वामी के बारे में है जो सारी सृष्टि के प्रभु, हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता और परमेश्वर की एक तस्वीर है। उसे फसल काटने का जुनून है। आप देख सकते

हैं, अंगूर की कटाई के लिए समय एक कारक था। इज़राइल की भूमि में, अधिकांश अंगूर सुक्कोट (तम्बू के पर्व) से पहले तोड़ लिए जाते थे, जो हमारे कैलेंडर में सितंबर और अक्टूबर के बीच में पड़ता है। यह उस समय के आसपास है जब बरसात का मौसम शुरू होता है। समय से पूर्व अगर अंगूरों के बारी से तोड़े जाने से पहले बहुत बारिश आ जाती तो अंगूर के स्वाद को मंद कर सकती है। यह अंगूर के छिलके के छिद्र होने का कारण बन सकता था, जो सूक्ष्मजीवों को जन्म देता है जो बेल के फल को सड़ा देता। हमारे दृष्टान्त में, खेत के स्वामी ने देखा कि अंगूर पके हुए थे और उन्हें जल्द ही कटाई की आवश्यकता थी। ध्यान दें कि स्वामी ने अपनी फसल में मजदूरों को चुनने की जिम्मेदारी किसी नौकर पर नहीं छोड़ी। इस खेत के स्वामी को इतनी परवाह थी कि वह जल्दी उठा, और भोर को जब मजदूरों का आगमन शुरू हो गया तो वह बाजार में था। उसे फसल के बारे में परवाह थी।

दिन की गणना सूर्य की स्थिति के अनुसार बारह घंटों में बाँटी जाती थी; जाहिर है, सर्दी के दौरान जब सूर्य इतना ऊंचा नहीं होता था, घंटे छोटे होते थे। भोर प्रातः 6 बजे और सूर्यास्त शाम 6 बजे होता था। पहला पहर सुबह के 9 बजे; दूसरा पहर दोपहर के 12 बजे, तीसरा पहर दोपहर 3 बजे और चौथा पहर शाम 6 बजे होता। ग्यारहवाँ घंटा शाम 5 बजे होता। उस समय तक, सूर्य लगभग नीचे आ जाता था, और दिन में कम ही रोशनी बची होती थी।

उन दिनों अगर मजदूरों के पास अपनी जमीन नहीं थी या फिर वह दास या नौकर के रूप में किसी परिवार से जुड़े नहीं होते थे, तो वे रोज़ाना मजदूरी करने पर निर्भर थे। ऐसे आम मजदूर जिनके पास कम कौशल था और वह किसी परिवार से जुड़े नहीं थे, वे इस उम्मीद के साथ कि कोई काम देने वाला आकर उन्हें उस दिन के लिए मजदूरी पर ले जायेगा, शहर के बाजार में आ जाते थे। जिनके पास कोई कौशल नहीं था वह कटाई करने वाले मजदूर थे, निम्नतम श्रेणी के मजदूर, क्योंकि, यदि वे एक दिन काम नहीं करते, तो उनके परिवार उस दिन खाना नहीं खाते थे। परमेश्वर ने मूसा को यह निर्देश दिए थे कि दिन के अंत में काम करने वाले को उस दिन का भुगतान किया जाना चाहिए:

**एक दूसरे पर अन्धेर न करना, और न एक दूसरे को लूट लेना। और मजदूर की मजदूरी तेरे पास सारी रात सबेरे तक न रहने पाए। (लैव्यव्यवस्था 19:13)**

यीशु के समय, रोमी पद-सैनिक की एक दिन की मजदूरी एक *दीनार* थी, इसीलिए एक दिन के लिए आम मजदूर को एक दीनार की मजदूरी की पेशकश किया जाना, यह अच्छा वेतन था। उन्हें तुरंत इस तरह की राशि के लिए काम करने के लिए सूचीबद्ध किया गया था। हालांकि एक दीनार राशि, इतनी कम धनराशी थी कि उससे केवल एक परिवार को एक दिन के लिए पर्याप्त भोजन प्राप्त होता था। उस समय में अंगूर तोड़ने और उसकी कटाई करने वाले लोग वित्तीय

सीढ़ी के सबसे निचले स्थान पर थे।

जिन्हें बाद में मजदूरी पर लिया गया था, वे इसलिए काम के अवसर से नहीं चूके थे कि वे आलसी थे। नहीं, वे वहाँ इसलिए थे क्योंकि किसी ने दिन के अंत तक उन्हें मजदूरी पर नहीं रखा था। ये पुरुष अभी भी श्रमिक विनिमय बाजार में इंतजार कर रहे थे क्योंकि वे बेहद निराश थे और उन्हें अपने परिवारों की देखभाल करने की आवश्यकता थी। खेत का स्वामी मजदूरी के लिए जाने की प्रतीक्षा कर रहे लोगों की हताशा को देख उनकी जरूरतों के प्रति करुणामय था। उन सभी को जिन्हें सुबह 9 बजे मजदूरी पर लिया गया था और बाद में बताया गया था, **“तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूँगा”** (मत्ती 20:4)। यह संभव है कि खेत के स्वामी ने उन्हें यह नहीं बताया कि वह दिन में बाद में किराए पर लेने वाले लोगों को कितना भुगतान करेगा, क्योंकि इसके कारण श्रमिकों के बीच असंतोष हो सकता था। इसके साथ ही, अगर दिन के शुरुआत में मजदूरी पर लगे लोगों को पता चलता कि खेत का स्वामी बाद में आए लोगों को उनके समान ही भुगतान करने जा रहा है, तो हो सकता है कि वे ईर्ष्या के विचारों के कारण अपने श्रम में ढीले पड़ जाते।

यह दृष्टान्त हमें खेत के स्वामी, स्वयं परमेश्वर के बारे में बताता है। यह हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर, सबसे पहले, हमें पाप के दास बाजार में खोजता है। यीशु ने खुद कहा, **“क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुआओं को ढूँढ़ने और उन का उद्धार करने आया है।”** हाँ, हमारा परमेश्वर अपनी फसल के बारे में बहुत परवाह करता है और यह लालसा रखता है कि बचाए गए सभी लोग उसकी दाख की बारी में काम पर जाएंगे। मजदूरों की बहुत आवश्यकता है:

**और उस ने उन से कहा; “पके खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर थोड़े हैं: इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो, कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे।”** (लूका 10:2)

वो अपनी फसल की परवाह करता है क्योंकि वह लोगों की परवाह करता है। वह नहीं चाहता कि कोई नाश हो जाए, लेकिन यह कि सब पश्चाताप करें (2 पतरस 3:9)। हमें कटनी लाने में मदद करने के लिए किसी भी तरह से श्रम करने की आवश्यकता है। अनन्त जीवन दांव पर हैं। उसका हृदय अपने लोगों की ओर है, और उसकी प्रकृति प्रेम और कृपा की है: **“<sup>8</sup>यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला और अति करुणामय है। <sup>9</sup>यहोवा सभी के लिये भला है, और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है”** (भजन 145:8-9)।

ध्यान दें कि हालांकि मजदूरों को दिन के विभिन्न समय पर काम करने के लिए बुलाया गया था, बुलाया उन सभी को गया था। यह हमें याद दिलाता है कि हम उसके निमंत्रण पर और उसके बुलाने पर राज्य में प्रवेश करते हैं। कोई भी अपने आप से राज्य में प्रवेश नहीं करता, और हम अपनी शर्तों पर नहीं आते हैं। एक बार जब हम उसकी पुकार सुनते हैं, तो हम सभी को

उसकी फसल की कटनी में काम करने के लिए नियुक्त किया जाता है। पवित्र आत्मा द्वारा खींचे जाए बिना कोई भी नहीं आता। तो हम देखते हैं कि यह शुरुआत से अंत तक अनुग्रह का ही कार्य है। इस खंड में उल्लेखित मजदूरी को सांसारिक मजदूरी के समान नहीं देखा जा सकता है क्योंकि जो हमें सेंट-मेंट में दिया गया हो, उसे हम कभी भी अर्जित नहीं कर सकते। यही कारण है कि मजदूरी इस दृष्टान्त में रुचि का प्राथमिक बिंदु है।

### दृष्टान्त का संदर्भ

जब तक हम दृष्टान्त के संदर्भ को नहीं देखते, हम दृष्टान्त की सही ढंग से व्याख्या नहीं कर पाते या समझ नहीं पाएंगे। जैसा कि हमने पहले कहा है, अध्याय विभाजन और पद संख्या बाद में रखी गई थी और मूल लेखन का हिस्सा नहीं थे। अध्याय बीस में दाख की बारी में मजदूरों का दृष्टान्त उन्नीसवें अध्याय में पतरस के साथ यीशु की चर्चा को जारी रखता है। प्रेरित पतरस यीशु के धनी युवक को दिए उस जवाब पर चौंक गया था जो प्रभु ने उस युवक को उससे यह पूछने पर दिया था कि उसके पास अब भी क्या कमी है। इससे पतरस उन पुरस्कारों के बारे में सोचने लगा जो उसके पृथ्वी की चीजों के बलिदान करने के बदले एक उचित इनाम होंगे।

<sup>21</sup>यीशु ने उससे कहा, “यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले।” <sup>22</sup>परन्तु वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था। <sup>23</sup>तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।” <sup>24</sup> फिर तुम से कहता हूँ, कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।” <sup>25</sup>यह सुनकर, चेलों ने बहुत चकित होकर कहा, “फिर किस का उद्धार हो सकता है?” <sup>26</sup>यीशु ने उन की ओर देखकर कहा, “मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।” <sup>27</sup>इस पर पतरस ने उससे कहा, “कि देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं: तो हमें क्या मिलेगा?” <sup>28</sup>यीशु ने उन से कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि नई उत्पत्ति से जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। <sup>29</sup>और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या लड़केवालों या खेतों को मेरे नाम के लिये छोड़ दिया है, उस को सौ गुना मिलेगा: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। <sup>30</sup>परन्तु बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे।” (मत्ती 19:21-30, बल मेरी ओर से जोड़ा गया है)

सत्ताईसवें पद में पतरस के विचारों पर गौर करें। उसके प्रश्न के पीछे “इसमें मुझे क्या मिलेगा”

का स्वार्थी विचार और आचरण है।

मत्ती 19:28-29 में यीशु ने पतरस को कैसे आश्वस्त किया? हमारे लिए स्वयं की तुलना दूसरे से करना खतरनाक क्यों है?

यीशु ने कहा है कि इस जीवन में उसके पीछे चलने वाले लोगों के लिए बहुत महान पुरस्कार होंगे, लेकिन प्रभु यह भी कहते हैं कि जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे (मत्ती 19:30)। यह बताने के लिए कि यीशु अपने शिष्यों में स्वार्थ और आत्म-सेवा करने वाले रवैये को ठीक कर रहा है, वह दृष्टान्त जिसका अध्ययन हम कर रहे हैं भी (मत्ती 20:16) यही कथन कहता है ।

### दृष्टान्त की व्याख्या

खेत का स्वामी परमेश्वर का प्रतीक है। मजदूर परमेश्वर के सेवक हैं, (यानी, जिन्होंने मसीह की वाचा में प्रवेश किया है । दाख की बारी(परमेश्वर के राज्य का प्रतीक है, परमेश्वर के राज और शासन का क्षेत्रफल। मजदूर राज्य में उन लोगों का प्रतीक हैं जिन्हें फसल काटने में मदद करने के लिए बुलाया जाता है। काम का दिन उनका जीवनकाल है। उस दिन का अंत जब खेत के स्वामी का सेवक अनुबंधित मजदूरों का भुगतान करने के लिए भेजा जाता है, वह संसार के अंत और अनंतकाल की शुरुआत में मसीह के आगमन की तस्वीर है: **“देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास है।”** (प्रकाशितवाक्य 22:12) पूर्वनिर्धारित दीनार का भुगतान वह पुरस्कार है जो परमेश्वर के राज्य का हर व्यक्ति प्राप्त करेगा, (यानी, वह जिसका परमेश्वर ने वादा किया है - अनंत जीवन का उपहार)। हमें दिए जाने अनंत पुरस्कारों की तुलना हमारे द्वारा इस धरती पर परमेश्वर के लिए किये गए कार्यों से नहीं की जा सकती। यदि हम अपने प्रति परमेश्वर की कृपा और दया की विशालता पर विचार करते हैं, तो श्रमिकों के मनों में मजदूरी की निष्पक्षता के विषय में चिंता हास्यास्पद लगती है। निष्पक्षता की इच्छा रखना मानवीय प्रवृत्ति है, लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह हमें “निष्पक्षता” के बजाय करुणा देता है। यदि हम उससे निष्पक्षता और न्याय चाहेंगे, तो हममें से कौन उसके सम्मुख खड़ा हो सकता है? यहाँ तक कि जो कार्य हम राज्य में करते हैं वह कार्य भी परमेश्वर ने हमारे करने के लिए समय से पहले तैयार किया है।

**क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया। (इफिसियों 2:10)**

वह मजदूर जो सुबह 6 बजे से शुरू करता है आभारी होने में असफल रहा और अपने स्वार्थ और दया के आभाव में दूसरों की ज़रूरतों के प्रति अंधा था। जब हम राजाओं के राजा की सेवा करते

हैं, तो हमें अपने आचरणों के बारे में सावधान रहना चाहिए। हम में से कुछ ने दिन के भोर के समय में मसीह में नए जीवन में प्रवेश किया है, यानी छोटे बच्चों के रूप में। जो लोग ऐसा करते हैं, वे अपने जीवन के दोपहर के समय में लाए गए लोगों की तुलना में बहुत दर्द, अफसोस और गलत चुनावों से अपने आप को बचा लेते हैं। मेरे लिए, मैं उड़ाऊ पुत्र की तरह, प्राण के सूखेपन का अनुभव करने और सूअरों को खिलाने के बाद तेईस वर्ष की आयु में मसीह के पास आया (लूका 15:11-32)। मेरे अनुभव में, मैं कभी सूअरों का किसान नहीं रहा, लेकिन पाप में मेरा उधम मुझे कुछ अप्रिय परिस्थितियों में ले गया। बुरे आत्म-सेवा और स्वार्थी हृदय के आचरणों से मुक्त होने के लिए जो मेरे प्राण में घर कर गए थे, बहुत सारे अनुग्रह और कई वर्षों का समय लगा। मैं आप में से उन लोगों से ईर्ष्या करता हूँ जो एक मसीही घर में प्रेम करने वाले ऐसे माता पिता के साथ-बड़े हुए हैं जिन्होंने आपको सुधारा है और मसीह का मार्ग दिखाया है। अपने जीवन के दोपहर में इस जीवन में प्रवेश करने वालों को बहुत जंगली घास निकालने की आवश्यकता है। **“पुरुष के लिये जवानी में जूआ उठाना भला है” (विलापगीत 3:27)।**

आप में से कुछ जो छोटी उम्र में परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर चुके हैं, उस दिन को याद नहीं कर पाते हैं जब आप मसीह में आए थे, और आप उन लोगों से ईर्ष्या करते हैं जिन्हें पाप के दोष का एहसास हुआ और वह जीवन की एक बड़ी उम्र में परमेश्वर की ओर मुड़े हों। शायद, आपको संशय है कि क्या आपने राज्य में प्रवेश किया भी है क्योंकि आप तिथि और समय याद नहीं कर सकते हैं मेरा एक मित्र है जो कुछ समय के लिए हॉलैंड में रहता था। वह उपनगर में अपने घर जाने का इरादा रखते हुए एम्स्टर्डम में एक ट्रेन में चढ़ा। दुर्भाग्य से, वह सो गया और पेरिस पहुँच कर जगा। उठने से पहले उसने बेल्जियम और फ्रांस की सीमाओं को पार कर लिया था और अब घर से कई मील दूर था। वह इस बात से अवगत नहीं था कि उसने सीमा पार कर ली है, लेकिन वह जानता था कि वह एक विदेशी देश में था। यह आप में से कई लोगों की तरह है जिन्हें जीवन और मृत्यु के बीच की सीमा को पार करना याद नहीं रहता। आप अपने हृदयों की गहराईयों में जानते हैं कि यीशु आपका है और आप उसके हैं। यदि ऐसा है और आप अपनी आत्मा में यह जानते हैं कि आप परमेश्वर की संतान हैं, और जबकि आप मृत्यु से जीवन में प्रवेश का सही समय याद नहीं कर सकते हैं, तब भी चिंता न करें। **“आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं” (रोमियों 8:16)।** यदि आप निश्चित नहीं हैं, तो आप निश्चित रूप से पाप से पश्चाताप कर सकते हैं और प्रभु यीशु की ओर मुड़कर उसे अपने जीवन में आने और आपके पाप को क्षमा करने के लिए कह सकते हैं।

आप में से वह लोग जिन्होंने जीवन के सुबह 6 बजे के समय में मसीह में प्रवेश किया है, सावधान रहें कि कहीं आपको लगे कि आपके उपर परमेश्वर की अधिक आशीर्षें हैं। मुझे लगता है कि यीशु यही चेतावनी पत्रस को दे रहा है, कि बाद में परमेश्वर के राज्य में ऐसे लोग प्रवेश करेंगे जो अपने जीवन में पत्रस को प्रयास, वरदान और अभिषेक में पीछे छोड़ देंगे, प्रेरित

पौलुस जैसे पुरुष, जो निश्चित रूप से पतरस को फलदायकता में पीछे छोड़ देंगे। प्रेरितों के कार्य की पुस्तक को पढ़ें और प्रेरितों 9 में पौलुस के परिवर्तन के बाद आप शायद पतरस के बारे में कम ही पढ़ेंगे।

ज्यादातर लोग अपने युवा या किशोर वर्षों में मसीह के पास आते हैं। शायद दृष्टान्त में यह दिन का प्रातः 9 बजे का घंटा होगा। अगर आप अपने किशोर या बीसवें वर्ष की उम्र के शुरुआती वर्षों में हैं और यदि आपने अभी तक मसीह को अपना जीवन नहीं दिया है, तो क्यों नहीं? आपको क्या चीज़ रोक रही है? क्या पाप के बंधन पहले से ही आपको नीचे जकड़े हुए हैं, जिससे आप अपने अंतिम गंतव्य के विषय में डगमगा रहे हैं? मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप और समय न जाने दें। अपने जीवन पर मसीह के दावों के बारे में विचार करें। आपके लिए क्रूस पर उसकी मृत्यु की ओर देखें, और उस अनन्त जीवन का उपहार प्राप्त करें जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है। वह अपने सभी बच्चों से वही अनंत जीवन की प्रतिज्ञा करता है! यह निर्धारित करे लें कि अब आप इसे प्राप्त करेंगे, कि आपके पास दिन की मजदूरी के अंत में हर बात के लिए आगे की ओर देखने की उम्मीद है।

आपको जीवन के किस पड़ाव में बुलाया गया था? एक-दूसरे के साथ साझा करें कि आपको बढ़ती उम्र के साथ के गैर-परमेश्वरीय मूल्यों और आदतों के साथ क्या कठिनाइयाँ हुईं।

### **अभी बहुत देर नहीं हुई है!**

आप में से बहुत से लोग जो इन शब्दों को पढ़ रहे हैं स्वयं को जीवन के मध्य चरण में, (यानी, दिन का दोपहर का समय) तीस से चालीस वर्ष की उम्र में पाते हैं। आपके लिए जो उस उम्र में हैं, आप महसूस कर सकते हैं कि अब तो बहुत देर होने लगी है, लेकिन जब तक आपके पास वर्तमान क्षण है, तब तक बहुत देर नहीं हुई है। जीवन के इस चरण में बहुत से लोग जीवन की कुछ ऐसी कठिनाइयों के कारण मसीह के पास आते हैं जो उन्हें उद्धारकर्ता की आवश्यकता के लिए जागृत करती हैं। आप अपने ऊपर आने वाली कठिनाइयों के लिए परमेश्वर को दोष नहीं दे सकते हैं, लेकिन जब आपके प्राण के लिए दुर्बल समय होते हैं, तब अपनी कठिनाइयों को आपको मसीह के पास ले आने की अगवाई करने दें। क्या आपने "अधेड़ उम्र" शब्द के बारे में सुना है? हमारे समाज में, लोग अपने यौवन को बचाए रखने के लिए बड़ी मात्रा में प्रयास करते हैं और पैसा खर्च करते हैं। लोग नहीं चाहते कि उनकी उम्र बढ़े! बेबी बूमर पीढ़ी (40 से साठ दशक की पीढ़ी) अपने यौवन को बचाए रखने की बेकरार कोशिश करने के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा क्यों है? हमें लगता है कि हमारे जीवन का सबसे अच्छा हिस्सा हमारे शुरुआती वर्षों में है! यही हमारा समाज हमें बताता है। संचार के सभी माध्यमों में जो संदेश हम देखते हैं, वे इस विचार

को मजबूत करते हैं। जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने एक बार कहा था: "यौवन एक अद्भुत बात है। इसे युवा लोगों पर बर्बाद करना शर्म की बात है।"

आपने कितनी बार सोचा है, "काश मैं उस ज्ञान के साथ समय में वापस जा सकूँ जिसे मैंने अब हासिल किया है?" दुनिया की सोच के विपरीत तथ्य यह है कि, परमेश्वर के राज्य में, उम्र एक कारक नहीं है। हम हर उम्र में और हमारे जीवन के हर पड़ाव पर परमेश्वर के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। परमेश्वर के लिए, जब उसके पास हमारे लिए कार्य है, हमारी उम्र उसके लिए प्रासंगिक नहीं है! शायद यह इस तथ्य के साथ जुड़ी है कि वो अनंत काल में बसता है? उनका दृष्टिकोण अलग है! आखिरकार, सोचिए कि परमेश्वर ने मूसा और इब्राहीम के जीवन के बाद के वर्षों में क्या किया था। यह सोचने में मूर्ख मत बनिए कि आप परमेश्वर के राज्य में सेवानिवृत्त हो सकते हैं! उसके पास आपके लिए हमेशा कार्य रहेगा। यदि आप अपने जीवन के बाद के वर्षों में मसीह के पास आए हैं, तो अफसोस से भरे मत रहिए। भले ही आप महसूस कर रहे हों कि देर हो चुकी है, परमेश्वर से इस विषय में एक ताज़ा दर्शन मांगें कि वह आप में और आपके माध्यम से क्या हासिल करना चाहता है। यहाँ तक कि दोपहर के 3 बजे भी, दाख की बारी में जाकर कटनी के लिए जो कुछ भी लाया जा सकता है उसे करने के लिए बहुत देर नहीं हुई है। आपकी भूमिका का हिस्सा एक ऐसी भूमिका है जो और कोई नहीं निभा सकता है।

वॉल्ट व्हिटमैन ने लीवज़ ऑफ़ ग्रास पुस्तक में उनकी कविता में इसे बहुत अच्छी तरह से कहा है:

“हे मैं! हे जीवन! इन बार-बार के सवालों में... ;  
विश्वासहीनों की अंतहीन गिनतियों में - मूर्खों से भरे शहरों में;  
जहाँ मैं अपने आप को बारंबार अपमानित करता हूँ, (क्योंकि मुझसे अधिक मूर्खतापूर्ण कौन,  
और मुझसे अधिक विश्वासहीन कौन?)  
उन आंखों में से जो प्रकाश की लालसा करती - स्वार्थी वस्तुओं की - उस बारंबार के संघर्ष में;  
सभी के खराब परिणामों में - मेरे चारों ओर घसिटती ओर गड़बड़ाती भीड़ में;  
आराम के खाली और बेकार वर्षों में - बचे खुचे से लिपटा हुआ;  
सवाल है, मुझे सवाल है! बहुत दुःख देने वाला, बारंबार का - इस सब में क्या भला, क्या भला,  
हे मैं! हे जीवन!

उत्तर।

कि तू है यहाँ - जहाँ जीवन है मौजूद, और तेरी पहचान;  
यह शक्तिशाली नाटक चलता चलेगा, और तू ही एक कविता का योगदान देगा।"  
- वॉल्ट व्हिटमैन, लीवज़ ऑफ़ ग्रास



“यह शक्तिशाली नाटक चलता चलेगा, और तू ही एक कविता का योगदान देगा” यह कविता सभोपदेशक की पुस्तक के एक पद की तरह लगती है। सुलैमान की तरह, वॉल्ट व्हिटमैन जीवन की व्यर्थता का सर्वेक्षण कर रहे थे और इसके अर्थ पर सवाल उठा रहे थे। वो वह व्यक्त करता है जो कई लोग महसूस करते हैं, खासतौर पर जीवन के बाद के समय में जब लोगों के पास चिंतन-मनन और अवलोकन करने का अधिक समय होता है। लेकिन कविता एक सकारात्मक अभिपुष्टि के साथ समाप्त होती है कि जीवन चलता जाता है और इसमें हर किसी का योगदान होता है। परमेश्वर के पास आपको उसे महिमा देने के लिए उपयोग करने का एक विशिष्ट तरीका है, आपके जीवन के बाद के हिस्से में भी; जीवन के हर पड़ाव में, आप "एक कविता का योगदान कर सकते हैं।"

इस खेत के स्वामी ने, जो हमारा परमेश्वर का प्रतीक है, आपको छोड़ नहीं दिया है, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप जीवन के किस पड़ाव में हैं। वह अभी भी शाम 5 बजे आपकी तलाश में आता है जब प्रकाश का केवल एक घंटा बचा है। कोई भी दिन के उस समय में मजदूरों की तलाश नहीं करता, परन्तु हमारे परमेश्वर ने आपको छोड़ नहीं दिया है! वो बाजार में आता है और आपको पाता है और बहुत विनय से आपको अपनी दाख की बारी में आमंत्रित करता है। हम इस तरह की कृपा पर लड़खड़ाते हैं जो इस मजदूर को वही देती है जो पूरे दिन काम करने वालों को देती है। जब परमेश्वर ने मूसा को जलती हुई झाड़ी से पुकारा था, तब अस्सी वर्ष की आयु में उसने पूरी तरह से जीवन में आस छोड़ दी थी। उसके पास इस बारे में एक के बाद एक बहाने थे कि परमेश्वर को अस्सी वर्ष की आयु में उसे उपयोग क्यों नहीं करना चाहिए। वह अपने वरिष्ठ वर्षों में परमेश्वर द्वारा बहुत उपयोग किया गया। ऐसे लोग हैं जो ऐसे रिश्तेदार या मित्र को जानते हैं जो अपनी मृत्यु-शैया पर परमेश्वर के राज्य में आए थे। जब तक समय है, तब तक अवसर है। क्रूस पर चोर का उद्वारण उन लोगों को बहुत सांत्वना देता है जो बीमार हैं और मृत्यु का सामना कर रहे हैं, और पश्चाताप में अपने चेहरे को स्वर्गीय पिता की ओर करते हैं। वे भी, अनंत जीवन का पहले से तय उपहार पाएंगे। वही अनन्त जीवन उन सभी को उपलब्ध कराया जाता है जो मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं।

इस कहानी में एक और "परत" है, (यानी, एक और तरीका है जिससे हम इस दृष्टान्त की व्याख्या कर सकते हैं)। एक दिन की अवधि को पिछले दो हजार वर्षों में कलीसिया के काल के रूप में भी देखा जा सकता है जहाँ इतिहास के कई मजदूरों ने खेतों में काम किया है। मैं ऐतिहासिक प्रेरितों के रूप में महान नामों के बारे में सोच रहा हूँ, स्तिफिनुस, फिलिप्पुस, बरनबास और वह लोग जिन्होंने कलीसिया के प्रारंभिक समय में प्रातः 6 बजे अपनी मजदूरी आरंभ कर दी थी। हम उन लोगों का नाम दे सकते हैं जिन्होंने बाद में अपने समय में मजदूरी

की जैसे मार्टिन लूथर, जॉन कैल्विन, जॉन वाइक्लिफ, जॉन वेस्ले, विलियम बूथ, विलियम विल्बरफोर्स, विलियम केरी, डेविड लिविंगस्टोन, चार्ल्स फिने, जॉर्ज व्हाइटफील्ड, हडसन टेलर, और सूची हमारे वर्तमान दिन तक जारी है। हम दिन के सांझ के घंटों में हो सकते हैं। मेरा मानना है कि परछाईयाँ लंबी हो रही हैं और परमेश्वर आगे आने वाली महान कटनी के लिए और अधिक मजदूरों की तलाश कर रहा है।

एक क्षण के लिए भी यह मत सोचो कि इस महान दिन के इस आखिरी चरण में कोई अधिक कार्य नहीं कर सकता है। यदि एक आदमी, जैसे पौलुस प्रेरित हमारे दिनों में रह रहा होता, तो वह परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए और मसीह की देह को उन्नत करने के लिए किस प्रकार तकनीक का उपयोग करता? जोशुआ परियोजना के आंकड़े (joshuaproject.net) का कहना है कि दुनिया भर की आबादी (मार्च 2014) 7.06 अरब लोगों पर है। इस संख्या में 2.94 अरब अभी तक पहुँचे नहीं गए हैं। उनमें से अधिकांश भारत, दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य पूर्व में हैं। हम में से वह जो अपने वरिष्ठ वर्षों में हैं लोगों के प्रौद्योगिकी के उपयोग कर दूसरों तक पहुँचने के तरीकों में उनका न्याय करने की परीक्षा में पड़ सकते हैं क्योंकि यह हमारे पिछले वर्षों की तरह नहीं है। साथ ही, मुझे यह भी विश्वास है कि यीशु मसीह की कलीसिया अब पहले से ज्यादा बड़े स्तर पर पवित्र आत्मा की उपस्थिति और शक्ति में चल रही है।

यीशु का अपने इस कथन से क्या अर्थ है कि जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे? परमेश्वर का अनुग्रह आज हमारे समाज में प्रचलित मूल्यों से किस प्रकार विपरीत है?

पवित्र आत्मा आज की कलीसिया को उस सामर्थ्य के विषय में सिखा रहा है जो दाख की बारी में मजदूरी कर रहे हर एक मजदूर के लिए उपलब्ध है। कलीसिया के इतिहास में एक समय पर, केवल एक चुना हुआ सेवक जिसे विहित व प्रशिक्षित किया गया हो, अंगूर समेट सकता था। हममें से जो लोग कई वर्ष पहले राज्य में आए थे उन्हें बताया गया था कि हमें अंगूर तोड़ने की प्रशिक्षिका को पढ़ने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है, क्योंकि इसे विशेष प्रशिक्षण के बिना समझा नहीं जा सकता। हमें बताया गया था कि हमें दाख की बारी के चारों ओर बैठना था और पेशेवर अंगूर तोड़ने वालों को काम करते देखना था कि हम देखें कि इसे कैसे किया जाता है। आजकल, हम देखना शुरू कर रहे हैं, खास तौर से जब हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा एशिया में अंगूर के खेतों में क्या कर रहा है, कि वह आम मजदूरों का उपयोग करने में सक्षम है - और मैं खुद को उसी श्रेणी में रखता हूँ। हम सभी अंगूर तोड़ सकते हैं; हमें तोड़ने की प्रशिक्षिका को पढ़ने के लिए विद्यालय में जाने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप किसी एक ऐसे विद्यालय में जाने में सक्षम हैं, तो बहुत ही अच्छा, लेकिन परमेश्वर के कुछ सबसे सामर्थी सेवक अंगूर तोड़ने वाले विद्यालय में नहीं गए हैं। इन आखिरी दिनों में, परमेश्वर उन सभी को उपयोग

करेगा जो उसके खेतों में काम करने के इच्छुक और आज्ञाकारी हैं (यशायाह 1:19)। गौर करें कि यीशु ने शुरुआती बारह चेलों को कहाँ चुना था। वो इज़राइल के यशेवा (इब्रानी प्रशिक्षण केंद्र) में नहीं गया था। उसने आपके और मेरे जैसे सामान्य लोगों को चुना। ऐसे लोग जिन्हें दुनिया की अंतिम पसंद माना जाता था! ऐसे कई लोग जिन्हें इस दुनिया द्वारा आखिरी माना जाता है, जब वे स्वर्गीय साम्राज्य में प्रवेश करेंगे तो पहले होंगे। युग के अंत में एक समय आएगा जब हम परमेश्वर के सम्मुख खड़े होंगे, और वो क्या ही दिन होगा! हम सभी के लिए जिन्होंने उसके पुत्र के लहू के द्वारा स्वर्ग के परमेश्वर के साथ लहू के वाचा के संबंध में प्रवेश किया है, यह अनंत काल में सबसे गौरवशाली दिन होगा।

**31जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्ग दूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। 32और सब जातियाँ उसके सामने इकट्ठी की जाएंगी (मत्ती 25:31-32a)**

जब वो दिन आएगा, तो इसके साथ कई अचंभित करने वाली बातें होंगी। ऐसे लोग होंगे जो इस दुनिया में अज्ञात और छिपे हुए थे, (यानी, वह लोग जो लोग पर्दे के पीछे मसीह के लिए परिश्रम करते रहे हैं) जिन्हें राज्य में सम्मान और महान पुरस्कार दिया जाएगा। वह लोग जिनके बारे में उनकी तड़क-भड़क भरी सेवकाई के कारण हम सोचते होंगे कि वह मेम्ने के विवाह-भोज में मेज के सिरे पर बैठे होंगे हमारी अपेक्षा से कम विशिष्ट हो सकते हैं! यह भी संभव है कि कई युवा पुरुष और महिलाएं हैं जो आज इन शब्दों को पढ़ रहे हैं जो इन सांझ के 5 बजे वाले घंटों में महान कार्य करेंगे, शायद जो हमने अब तक देखा है उससे भी कहीं बड़े। हम जानते हैं कि, जैसे-जैसे इस दुनिया में अंधकार गहराता जा रहा है, वैसे-वैसे सुसमाचार की महिमामय चमक उज्ज्वल होती चली जाएगी। आखिरकार, क्या यीशु के काना में विवाह-भोज में सर्वश्रेष्ठ दाख-रस को अंत के लिए नहीं बचाया? मेरा मानना है कि वह लोग जो अंतिम दिनों में उपयोग किए जाएंगे वे परमेश्वर के लिए महान कार्य करेंगे (दानियेल 11:32)। इन लोगों के लिए जो कटनी के लिए दिन में देर तक काम करते हैं, यह कथन निश्चित रूप से लागू होगा: जो पिछले हैं, पहले होंगे! बेशक, जब वो अपनी महिमा में प्रकट होगा तो हमारा आनंद उसके सम्मुख खड़े होने में होगा।

मुझे इस सवाल पर वापस आने दें जिसे पतरस ने यीशु से पूछा था, "हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं: तो हमें क्या मिलेगा?" असल में, पतरस कह रहा था, "हमें इससे क्या फायदा?" याद रखें, उन्होंने अभी धनी युवक का सामना किया था जिसे यीशु ने अपने राज्य के लिए अपनी संपत्ति छोड़ने की चुनौती दी थी। वो ऐसा नहीं कर सका। पतरस के लिए यह प्रलोभन हो सकता था कि वह दूसरों के जीवन से अपने जीवन की तुलना करे और बलिदान और पुरस्कार के मामले में सोचने लगे, लेकिन यीशु चाहता था कि वह राज्य में होने के आनंद

के कारण राज्य में सेवा करे, न कि पुरस्कारों के लिए। इस दुनिया में बहुत से लोग जिन्होंने महान पुरस्कार और प्रशंसा अर्जित की है, अगर उनकी मंशाएं स्वार्थी थीं तो राज्य में उनका स्थान निचला होगा। एक बार फिर, हम यीशु को इस मामले में पतरस के हृदय तक जाते हुए पाते हैं, इस कहानी को सुनाने के द्वारा वो उसके हृदय को प्रकट करने के लिए उसके मन को अपमानित करता है। यह मसीही जीवन का एक विरोधाभास है कि जो भी इनाम पाने का लक्ष्य रखता है, वो उसे खो देता है और वह जो सेवा के आनंद में इनाम को भूल जाता है, वो उसे पाता है।

**जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।  
(मत्ती 10:39)**

मैं चाहता हूँ कि हम खेत के स्वामी की दयालुता उसकी करुणा पर एक पल के लिए ध्यान केंद्रित करें क्योंकि उसने दिन में देर से इन मजदूरों को अपनी कटनी में कार्य करने के लिए चुना था। हम नहीं जानते कि पहले उन्हें काम के लिए क्यों नहीं चुना गया था। जब उनसे पूछा गया कि वे वहाँ ऐसे क्यों खड़े थे, तो उनका जवाब था, "किसी ने हमें काम पर रखा ही नहीं है।" ऐसा हो सकता है कि वे बाजार में सही समय पर नहीं आए थे। यह भी हो सकता है कि उनकी कुछ शारीरिक निर्बलताएँ थीं, इसलिए उन्हें पहले काम पर नहीं लिया गया था। शायद कुछ बूढ़े थे और अन्य मजदूरों की तरह ताकतवर नहीं दिखते थे, इसलिए उन्हें इस विचार से छोड़ दिया गया कि वे कटनी में उतने उपयोगी नहीं होंगे। खेत का स्वामी, जो पिता परमेश्वर का प्रतीक है, उसने उनकी शारीरिक सीमाओं या ऊर्जा पर विचार नहीं किया। उसने उन्हें इसलिए नहीं छोड़ दिया कि वे इतने फलदायी नहीं होंगे। उसका अनुग्रह पर्याप्त है। वो अपने संतों को उस कार्य को करने में सशक्त बनाता है जो वह उन्हें देता है, उनकी उम्र, शिक्षा या कौशल के बावजूद। उसका परम विचार, उसका जुनून, कटनी लाना है। वो उन्हें उसकी दाख की बारी में काम करने की उनकी इच्छा और उनकी आज्ञाकारिता के अनुसार सशक्त बनाएगा। वे दाख की बारी में "पूरे दिन" से काम कर रहे लोगों के साथ मिलकर काम करेंगे। कटनी को लाने का हिस्सा होने का आनंद उनके बीच एक समान बात होगी। मसीह के पीछे चलना शुरू करने में अभी भी देर नहीं हुई है। राज्य में अपना उद्देश्य और कटनी में अपना स्थान ढूँढने में कभी भी देर नहीं होती।

प्रार्थना: पिता, मैं उन सभी के लिए प्रार्थना करता हूँ जिन्हें शत्रु ने यह फुसफुसा कर कहा है कि वे बहुत बूढ़े हैं या उपयोगी नहीं हैं। बहुत से लोग महसूस करते हैं कि आपने उन्हें नज़रअंदाज़ कर दिया है। हर एक को शत्रु के झूठों को देखने में मदद करें। प्रत्येक व्यक्ति के लिए जो इन शब्दों को पढ़ रहा है, मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह अब और समय व्यर्थ नहीं करें और कि आज वह दिन होगा जब वे इस अलौकिक प्रेम की पुकार को सुनेंगे और आकर खेत के स्वामी की

दाख की बारी में कार्य करेंगे। हम आपके राज्य में होने के लिए और आपकी अलौकिक योजना का हिस्सा होने के लिए आभारी हैं। आमीन।

कीथ थॉमस

निःशुल्क बाइबिल अध्ययन के लिए वेबसाइट: [www.groupbiblestudy.com](http://www.groupbiblestudy.com)

ई-मेल: keiththomas7@gmail.com